डॉ भावना शेखर

सी/43 जगत अमरावती अपार्टमेंट
पटना, 800001

आजकल नहीं लिख रही मैं

प्रेम की कविताएं

रात भर जागती आंखों के आगे नाचती हैं
लहू में सनी अखबार की सुर्खियाँ
कानों में गूंजती है
गालियों गोलियों और पत्थरों की बौछारें
मुझे कंपाते हैं हर रात
तिरंगे में लिपटे शहीदों के ठंडे जिस्म
मेरी स्याही जम गई है
कलम की नोक पर
तुर्की के तट पर जमी
ऐलन कुर्दी की लाश की तरह

इसलिए
आजकल नहीं लिख रही मैं
प्रेम की कविताएं

खुली आँखों में घूमता है
मंजर
लहू के चकत्तों और
जले हुए जिस्मों का
पठानकोट से पेशावर तक।
मंजर
दहशत और खौफ का
मैनचेस्टर ब्रसेल्स स्टॉकहोम से
पेरिस लन्दन स्पेन तक।
नहीं पढ़ी जाती
इंसानियत की बदली हुई तहरीर।
थर्राती है
खस्ताहाल कुदरत।
दहलाती है
ओस की खुश्क होतीं मासूम बूंदें
बंधकों की जान लेते
चार साल के जेहादी बच्चे की तरह

इसीलिए
आजकल नहीं लिख रही मैं
प्रेम की कविताएं

फूलों झूलों परिंदों की जगह
बिल्कुल अलहदा तस्वीरें
उभरती हैं अब तसव्वुर में
तस्वीर
मोसुल में मलबे में दबे
कच्चा मांस खाते
उस तीन साल के बच्चे की
और नन्ही अमीना की।
तस्वीर